Cosmos Multidisciplinary Research E-Journal
Online Available at www.cmrj.in
Recognized International Peer Reviewed Journal
Impact Factor 5.3
ISSN No. 2456-1665

वैश्वीकरण में पत्रकारिता और न्यू मीडिया स्थान

डॉ. दत्तात्रय फुके
अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
राजर्षी शाहू महाविद्यालय, पाथ्री, तहसील–फुलंब्री
जिला–छत्रपति संभाजी नगर (महाराष्ट्र)

समूचे विश्व को एक ही अर्थनीति के तहत एकत्र लाना वैश्वीकरण है। वैश्वीकरण एक तरह से आर्थिक साम्राज्यवाद है, जो बहुराष्ट्रीय कंपनियों के माध्यम से फल–फूल रहा है। बहुराष्ट्रीय कंपनियॉ बाजार, मीडिया तथा विज्ञापन के सहारे अपनी काली दुनिया का काला साम्राज्य फैला रही है।मीडिया का अंतरजाल मध्ययुगीन संतों के मायाजाल से भी भयावह है। वैश्वीकरण से उपजी उपभोक्तावादी संस्कृति अर्निबंध अर्थमंथन को बढावा देती हुई मनुष्य को उपभोक्ता बनने के लिए विवश करती है। इस संस्कृति ने आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक तथा प्राकृतिक परिवेश को प्रभावित किया। वैश्वीकरण के इस रंग में रंगकर भाषा, साहित्य, समाज तथा संस्कृति बेरंग होती जा रही है।

वैश्वीकरण के इस क्रूर चेहरे को बेनकाब करते हुए *डॉ. लोकशचंद्र* कहते हैं,– ''वैश्वीकरण का अर्थ विश्व–विजय है, इसमें अलग–अलग तंत्रों की अलग–अलग राष्ट्रों की भागीदारी नहीं। वैश्वीकरण एकेश्वरवाद का रुपांतरण है जिसमें अनेक राष्ट्रीय अस्मिताओं को, विभिन्न मूल्य बोधों को समाप्त कर अधिनायकवाद की स्थापना है। इसके लिए मनुष्य जाति की आर्थिक–लिप्सा और विलासिता की मोहमाया को, उपभोक्तावाद, उदारीकरण और फैशन की लुभावनी नग्नता, उपयोगिता और उदारता के आकर्षक शब्दों से भडकाया जा रहा है। एक विश्व के नाम पर सब राष्ट्रों को आर्थिक, सांस्कृतिक और सुरक्षात्मक दासता में बॉधा जा रहा है। संस्कृति की अवधारणा को प्रश्न बनाकर एशिया को, यूरोपिय जातियों को, भ्रम जाल में फैलाया जा रहा है। मोहिनी शब्द– माया में, भडकीले चित्र निरुपन में, समाचार–पत्रों के दिन–प्रतिदिन आघातों से मनुष्य के मन का बाजारीकरण हो रहा है। पूँजीवाद का यह जघन्य पक्ष है, जो प्रदूषण से भी अधिक घातक है।''[1] वैश्वीकरण के इन विभिन्न खतरों को हिंदी कवियों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से बयान किया।

हिंन्दी का प्रथम समाचार पत्र–**उदंण्ट मार्तड** को जाता है जो इस 30 मई 1826 ई जुगल किशोर ने निकाला 1786 में जेम्स आगस्टस हिकी ने **बंगाल गजर** या **'कोकटटा**

जनरल एडवर टायजर नामक पत्र निकलकर भारतीय पत्रकारिता की नींव रखी, जो वैश्वीकरण के जनसंचार के माध्यम में सिध्द साबित हुई। इसी वर्ष पीटर रीटर रीड ने इंडियन गजट नाम से ईस्ट ईण्डिया कंम्पनी के समाचारो को प्रकाशित करने के लिए दुसरा पत्र निकाला यह पत्र लगभग पच्चास वर्ष तक प्रकाशित होता रहा। 1821 में फारसी भाषा में **मिरातुल अखबार** तथा **''संवाद कौमुदी''** निकालने का श्रेय राजाराम मोहनराय को जाता है। युध्दकाल में उन्होंने 'बंगदुत' का प्रकाशन किया। जो बंगाल, फारसी, आंग्रेजी और हिन्दी भाषा में छपता था। 1833 में टाइम्स ऑफ इंडिया का प्रारंभ हुआ तथा 1875 में राबट नाईट ने अंग्रेजी समाचार पत्र **'स्टेटमैन'** प्रकाशित किया 1866 में **''अमृत बाजार पत्रिका**, बंगाली साप्ताहिक के रूप में प्रकाशित हुई। 1865 में अंग्रजी समाचार पत्र पायनियर का प्रकाशन 1878 में हिन्दू' 1881 में ट्रिब्युन 1923 में 'हिन्दुस्तान टाईम्स' 'यंग इंडिया', 'हरिजन निराला', मतवाला, हिंदी प्रताप, एक नही ऐसे अनेक अखबार यानी स्वतंत्रता प्राप्ती के पश्चात तो समाचार पत्रो की बाढ सी आ गई। जो दुनिया में जनसंचार के रूप में इन समाचार पत्रो का नाम महत्वपुर्ण है।

आज देखा जाए तो आदिकाल से लेकर आजतक वैश्वीकरण के दौर में अनेक बदल हो चुके है। मनुष्य प्राणी बुध्दीमान होने की वजह से हर प्रकार की नवक्रांती हो चुकी है। इस दौर में पत्रकारिता और न्यु मिडिया कैसे पिछे रह सकता है। पत्रकारिता क्षेत्र बहुत विशाल है। इसमें समाचार संकलन से लेकर समाचारों का सम्पादन प्रकाशन, प्रसारण और लोगों तक पहुंचाना सभी कुछ सामिल है। पत्रकारिता दैनिक जीवन की घटनाओं की संवाहिका होती है। इसमें घटनाकों, तथ्यों और समाज से जुडी प्रत्येक विधा की प्रस्तुति होती है। जहॉ यह शासकों और शासितों के मध्य एक सेतु का कार्य करती है वही यह देश की राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, कलात्मक, एवं अन्य सभी विषयों से सम्बधिंत समाचारों का प्रकाशन एवं प्रसारण जन सामान्य हेतु अपने–विविध माध्यम से करती है।

हवर्ट बुकर के शब्दों में ''पत्रकारिता वह माध्यम है, जिसके द्वारा हम अपने मस्तिष्क में दुनिया के बारे में वह समस्त सूचनाएँ संकलित करते है, जिन्हे हम स्वतः कभी नही जान सकते।'' पत्रकारिता व्यक्तिगत चोर है, जो छिपे हुए समाचारों की तह तक जाकर उन्हें धरातल पर लाकर खडा कर देती है। पत्रकारिता दुरदर्शन पटल पर मीलो दुर लडे जा रहे युध्द का सजीव प्रदर्शन है, मंगल ग्रह पर पैर जमाते हुए राकेट की कहानी है, आम आदमी की जिन्दगी की तस्वीरों से लिखि कहानी है। हिन्दुस्थान, नवभारत टाइम्स, हिन्दुस्तान टाईम्स, टाईम्स ऑफ इंडिया, दैनिक जागरण, स्टेटसमैन, दैनिक भास्कर तथा अन्य अखबारों में प्रकाशित खबरों

की आत्मा है। पत्रकारिता छोटे से समुह में सवांद स्थापित कर सकती है। यह विशाल जनमानस से एक–दुसरे से परिचित करवा सकती है। सच तो यह है कि पत्रकारिता समाचारों की सम्प्रेषक है। खबरों की वाहक है। ज्ञान के सैलाब की संरक्षिका है। भारत के पूर्व राष्ट्रपती डॉ. शंकर दयाल शर्मा ने पत्रकारों से भी अपेक्षा की की वह केवल नित्य–प्रति घटने वाली घटनाकों की सुचना मात्र ही समाज के समक्ष प्रस्तुत न करे, अपितू उनका सकारात्मक विश्लेषण प्रस्तुत कर समाज को एक नई दिशा दिखाने का प्रयास भी करे। उनके अनुसार लोकतंत्र की परम्पराओं की रक्षा, भाईचारे के भाव को सुदृढ करने तथा समाज में शान्ति बनाए रखने का उत्तरदायित्व पत्रकारिता का ही है ।

दुनिया में आदिकाल से लेकर अनेक समाचार पत्र पत्रिकाएँ निकाले गएँ है। पत्रकारिता समाजिक गतिविधियों का दर्पण भी है। इसके माध्यम से हम अनेक जानकारियॉ प्राप्त कर सकते है जिनके सम्बन्ध में हम कभी सोच भी नही सकते। प्रसिध्द पत्रकार मेक डोनाल्ड पत्रकारिता को रणभुमि से भी बडा मानते है। उनके अनुसार पत्रकारिता कोई पेशा वही अपितु पेशे से भी कोई उॅची चीज है।''

पत्रकारिता की वाहक पत्र पत्रिकाएँ समाज का दर्पण होती है। इनमें किसी समाज का सम्पूर्ण लेखा जोखा होता है। समाज में जो हुआ जो हो रहा है या फिर कल जिसके होने की सम्भावना है – उसका सम्पूर्ण चित्रण – पत्र – पत्रिकाओं में मिलता है। समाज को एक दिव्य दृष्टी देती है। समाज को समय के अनुसार बदलने की प्रेरणा देती है। हम हर दिन टि. व्ही चॅनसल में देश दुनियॉ की हर एक ऑखो देखा हल देखते है। दुरदर्शन पे तो हम मराठी खबर हर – राज्य देश के भाषाओं में दुनियॉ का प्रोग्रॅम हमे दुरदर्शन पे देखने को मिलता है। टि.वी मोबाईल, इंटरनेट, व्हॉटस्स अप, ऐसे अनेक माध्यम से हम – न्यु मिडिया के माध्यम से नव ईलेक्टॉनीक माध्यम से गुजर रहे है।

मिडिया में अनेक प्रकार की पत्रकारिता की जा रही है– जैसे 1. राजनैतिक पत्रकारिता 2.सामाजिक पत्रकारिता 3. आर्थिक पत्रकारिता 4. धार्मिक पत्रकारिता 5. फिल्म पत्रकारिता 6. खेल पत्रकारिता 7. शिक्षा पत्रकारिता 8. साहित्यीक पत्रकारिता 9. आद्योगिक पत्रकारिता 10. कच्च तकनिकी पत्रकारिता 11. चिकीत्सा पत्रकारिता 12. कृषी पत्रकारिता 13. खोजी पत्रकारिता वन्य जीव सम्बंधी पत्रकारिता 15. आटोमोबाईल पत्रकारिता 16. गृह सज्जा पत्रकारिता 17. ज्योतिष पत्रकारिता 18. पर्यावरण पत्रकारिता 19. कम्प्युटर पत्रकारिता ऐसे अनेक प्रकार हमे पत्रकारिता के मिलने है। पत्रकारिता का क्षेत्र बहुत विशाल है। इसमें समाचार संकलन से लेकर

समाचारों का सम्पादन प्रकाशन, प्रसारण और लोगों तक उन्हें पहूँचाना सभी कुछ सामिल है। पत्रकारिता दैनिक जीवन की घटनाओं की संवाहिका होती है। जहॉ यह शासकों और शासितों के मध्य एक सेतुका कार्य करती है वही यह देश की राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, कलात्मक, एवं अन्य सभी विषयों से सम्बधिंत समाचारों का प्रकाशन एव प्रसारण जन सामान्य हेतु अपने – विविध माध्यम से करती है।

आज का युग नव तंत्रज्ञान नव टेक्नॉलॉजी का युग हे। इसी समय साहित्य भी उतनी ही तेजी से लिखा जा रहा है। आज के एक दिवसीय संगोष्टी का विषय ''मैने वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में पत्रकारिता और न्यु मिडियॉ इस प्रकार कालिया है। जो संपूर्णात पत्रकारिता और न्यु मिडियॉ के बारे में पुरी जानकारी देना–आज संभव नही। फिर फिर भी मैने – महत्वपुर्ण बातों को ध्यान में लेकर महत्वपुर्ण पहलु को लेकर चर्चा करने के कोशिश की है।

पत्रकारिता और मिडिया का गहरा संबंध है। पत्रकारिता शक्ती है। आज पत्रकारिता के दायित्व का निर्वाह केवल पेशेवर पत्रकोष (Professional Journalists) तक ही सिमित नही रह गयही है। पत्रकारिता का दायश बहुत बढ गया है। कॅमरा मोबाईल, इंटरनेट नव ईलेक्टॉकनिक माध्यम के अविष्कार से समाज का एक सामान्य किन्तु सजग नागरिक भी पत्रकार बन चुका है। इस नए पत्रकार वर्ग ने ''नागरिक पत्रकारिता'' (Citizen Juanalism) की संकल्पना (Concept) को केवल मूर्तरूप प्रदान किया अपितु उसे आशातीत गती प्रदान की। नागरिक – पत्रकारिता पत्रकारिता की संकल्पना से प्रेरित व्यक्ति आज ऐसे दुर्लभ समाचारों, घटनाओं और चित्रों को मिडियॉ के विभिन्न माध्यम जैसे – इंटनेट, फेसबुक ब्लाग के द्वारा विश्व के दुरस्त स्थानों तक पलक झपकते पहूँचा देते है। जो व्यावसायिक पत्रकारों के वश में नही। क्योकि वह प्रति पल – पति स्थान पर नही जा सकेत जब की घटनाएँ प्रतिपल और कही भी हो सकती है। वैश्वीकरण के इस दौर में जो माध्यम में – हमतक पहॅचती है – उसका उल्लेखकरना भी आवश्यक है। आधुनिक युग में संचार माध्यम अत्यंत लोकप्रिय है और पुरे समाज के लिए स्विकृत भी। संचार माध्यमों हम दो वर्गो में बॅटेगें

1. परस्परागत माध्यम :– मुनादी, नौटंकी, दुग्गी, ढोलपटिना, रामलीला आदि 'आधुनिक माध्यम को हम ती वर्गो में बॅटते है'।
2. मुद्रण माध्यम 2 इलेक्ट्रॉनिक माध्यम 3 नव इलेक्ट्रॉनिक माध्यम

इन सभी माध्यमों से हमें जन–संचार की हर खबर घटनाएँ जानकारी प्राप्त होती है। पत्रकारिता और मिडिया का अटुट संबंध रहा है। ऐसी जोखीम भरी त्वरित पत्रकारिता का ज्वलंत उदाहरण है सितम्बर 11, 2011 का लदंन भुमिगत ट्रेन का बम कांड तथा नवम्बर 26

2008 को भारत में हुआ ताज होटल पर आंतकी हमला इन सभी घटनाओं के सजीव चित्र उन सजग नागरिको ने अपने कैमरा, मोबाईल विभिन्न समाचार पत्रों, समाचार एजेसियो टि. व्ही. चैनल्स को त्वरित गति से भेजे जो दुनिया के प्रत्येक कौने में रहने वाले लोगों ने देखे। पत्रकारों ने ऐसे ऐसै दुर्लभ चित्र भेजे जो उनके प्रयासो के अभाव में विश्व समुदाय तक कभी पहूँच नही पाते।

***मिडिया – समाचार की समीतीयॉ :–**

समाचार या संवाद समितियॉ ऐसे निजी अथवा सरकारी संगठन है जो देश–विदेश के महत्वपुर्ण समाचारों का संकलन करती है और उन्हे अपने ग्राहकों को समाचार पत्रा पत्रिकाएँ, रेडिओ टि.व्ही. तक पहॅचाती है।

वैश्वीकरण के इस जाल में आज लगभग सभी एजेसियों ने समाचार के साथ फोटो –सेवा भी प्रारंभ 92 वी है। इन सभी एजेसियॉ देश – विदेश के कोने–कोने तक समाचार हेतु अपने संवादाता नियुक्त करके समाचार पत्र का संकलन–कार्यालय में सकलित होकर वहॉ समाचार आते रहते है। समितीयॉ केवल उनकी आय का एकमात्र स्त्रोत अपनी सेवाओं के प्रतिफल के रूप में प्राप्त होने वाला शुल्क है।

भारत की प्रमुख समाचार समितियॉ

1. प्रेस ट्रस्ट ऑफ इण्डिया – PTI –Dellhi 1949
2. युनाइटेड न्युज ऑफ इंडिया – PTI –Dellhi 1949
3. एशिया न्युज इण्टरनेशनल – ए.एन.आय.
4. हिन्दूस्तान समाचार
5. समाचार भारती – 1966 हिंदी समाचार पजों के लिए संकलित करने के उददेश से किया गया– अधिक सफल नहो पाई।
6. समाचार
7. युनिवार्ता
8. भाषा
9. यु.एन आई उर्दू सेवा

अन्तर्राष्ट्रीय टेलीविजन समाचार समिती

1. विजन न्युज – (Vis News) –ब्रिटन 1957
2. यु.पी. आई. टी.एन यह एक कहुराष्ट्रीय टि.वी न्युज ऐजेन्सी ते अस्सी देशों के लगभग 250 टी व्ही केंद्र इसकी सेवाएँ ले रहे है.

अन्तराष्ट्रीय प्रसारण एजेनसी

इसके अंतर्गत तीन आन्तराष्ट्रीय प्रसारण एजेन्सीयॉ उल्लेखणीय

1. ब्रिटीश ब्राउकास्टिंग कॉरपोरेशन .1922
2. वॉयस ऑफ अमेरिका .1941
3. आल इंण्डिया रेडिओं (AIR) 1936.1946 सुचना प्रसारण मंजालय.के अधिक

इलेक्टॉनिक मीडिया

1. **रेडिओ** – भारत में सबसे पहला रेडिओ स्टेशन–कलकता–1923 आकाशवाणी–प्रोफेसर डॉ. गोपाला स्वामी–1935–स्वातंत्रता प्राप्ती प्रति के पश्चात देश में रेडिओ का अभुतपूर्व विकास हुआ सन 1950 में 25 रेडिओ केन्दो में साठ हजार घण्टे से ज्यादा प्रसारण हो रहा था। देश के 21 प्रतिशत लोक 12 प्रतिशत क्षेत्र में मीडियम वेब सेवा उपलब्ध थी। इसके अलावा'' विदेशी भाषाओं में 116 घन्टे प्रति सप्ताह विदेशी प्राताओ के लिए प्रसारण हो रहा था। विदेश सेवा के लिए अकाश वाणी का एक अलग विभाग है: जिसके माध्यम से लगभग भाषाओं में प्रतिदिन कार्यक्रम प्रस्तुत किए जाते है। वर्तमान समय में इसके 125 केंद्र है। जिनसे देश की नव्वे प्रतिशत जनता लाभान्वित हो रही है।

आकाशवाणी अवाघ रूप से लगभग चोवीस भाषाओं और 146 बोलिओं में अपने कार्यक्रम प्रस्तुत करती है– दुरदर्शन –1884 वर्ष–1939 न्युयार्क में विश्व मेला में दशकों ने दुरदर्शन पर कार्यक्रम देखे और लाभान्वीत हुए। देश में पहली रंगीन टि.वी–1982 आ गई।

वैश्वीकरण की परिप्रेक्षय में– न्यु मिडियॉ की बात भी एक करनी पडेगी जो प्रोद्योगीकी के विकास के साथ समाचार जगत में नई क्रांती का सुत्रपात हुआ। पहले– जो अधिक समय लगता था अब कम्प्युटर तकनिकी के माध्यम से सहज संभव हो गया है। वस्तुःत सुचना प्रौधोगिकी ने विश्व – गॉव की कल्पना को साकार कर दिया है। हम आज दुनिया के दुरस्थ क्षेत्रों में बैठे व्यक्तियों से नितान्त वैयक्तिक संवाद स्थापित कर सकते है। उनसे बातचित कर सकते है। और उनके सजीव चित्रो का कम्प्युटर या टि.बी मोबाईल पर हुब हु देख सकते है।

प्रौधोगिक विकास के फलस्वरूप ही ई बैकिंग, ट्रेन व हवाई जहाज आदि में ई.बुकिंग की सुविधा का सुत्रपात हो सका है।

1. वेब पत्रकारिता:– वर्ल्ड वाइड वेब या डब्ल्यू डब्ल्यू डब्ल्यू या वेब अन्तराष्ट्रीय स्तर पर सुचना देने का एक सशक्त एवं तीव्रतर साधन है। वेब के मुलाधार कम्प्यूटर (computer) तथा इण्टरनेट (Internet) है। कोई भी व्यक्ति इन दो मुलाधारों के माध्यम से वेब पर सुचना दे सकता है और इस पर उपलब्ध सुचनाओ को पढ सकता है। अक्सर वेब और इण्टरनेअ को एक दुसरे को समरूषी (Synonym) समझा जाता है। लेकिन यह दोनो शब्द समरूपी नही

है। वेब एक सेवा है ओर इण्टरनेंट इस सेवा का प्रदान करनेवाला माध्यमा तात्पर्य इतना ही है कि इस वैश्वीकरण के युग में न्यु मिडिया–नव–क्रांती हो चुकी है।

यह कहना अतिश्योक्ति न होना कि टाल मे हुई प्रौधोगिकी क्रांती का परिणाम है वेब पत्रकारिता। इस पत्रकारिताके सुचनाओं व समाचारों का दुर–दुर तक लोगो में पहुॅचाने के अनेक विकल्पों को प्रस्तुत किया है जैसे फेसबुक, टिवटर और अन्य शोशल नेटवर्किंग की वेब साइटस। वस्तुत यह एक ऐसी धारा है जिसने एक सक्रिय नागरिक को भी पत्रकार बना दिया है। इसमें पत्रकारिता की समस्त विधओ जैसे–शब्द,चित्र, ग्राफिक्स , आडिओं तथा वीडिओ का संगमन हो गया है।

सुचना प्रौधोगिकीय क्रांती के मानव जीवन के प्रत्येक पक्ष को बदल दिया है। वेब मिडिया के माध्यम से हम कुछ भी ढुॅढ सकते है। हिन्दी के कतिपय बडे समाचार पत्र जो वेब साईट पर उपलब्ध है– उनमें सहारा, अमर उजाला, भास्कर।

सरांश –

हम कह सकते है की पत्रकारिता और न्यु मिडियॉ ने, वैश्वीकरण के समुच्च जन–समुदाय को, हर खबर को लाभान्वीत किया है, जो आज के युग में महत्वपुर्ण भुमिका जनसंचार माध्यम से निभा रहे है।

इस जन– संचार के जानकारी का सारांश यह है की, सभी जन समूदाय तक यह पत्रकारीता न्युमिडया की जानकारी लोगो तक अधिक से अधिक पहुचनी चाई और उसक प्रचार एवं प्रसार होना चाहिऐ। तभी यह संगोष्ठी में यह पत्रकारीता और न्यु–मिडिया की जानकारी सफल रही ऐसा मै मानूगा।

संदर्भ –

1. संपा. विमलेश शर्मा तथा मालती, भाषा साहित्य और संस्कृति, पृ.442
2. पत्रकारिता और न्यु–मिडिया – डॉ सुजाता वर्मा– विकास प्रकाशन कानपूर. पृ.14
3. पत्रकारिता एक मिशन– मिडिया संदिप उपाध्याय तक्षशिला प्रकाशन नई दिल्ली. पृ.49
4. जनसंचार – इंटरनेट
5. दैनिक भास्कर.